1970C An open letter in Support of Suryanarayan Vyas

In Paryushan Parv *Smarika 1970*

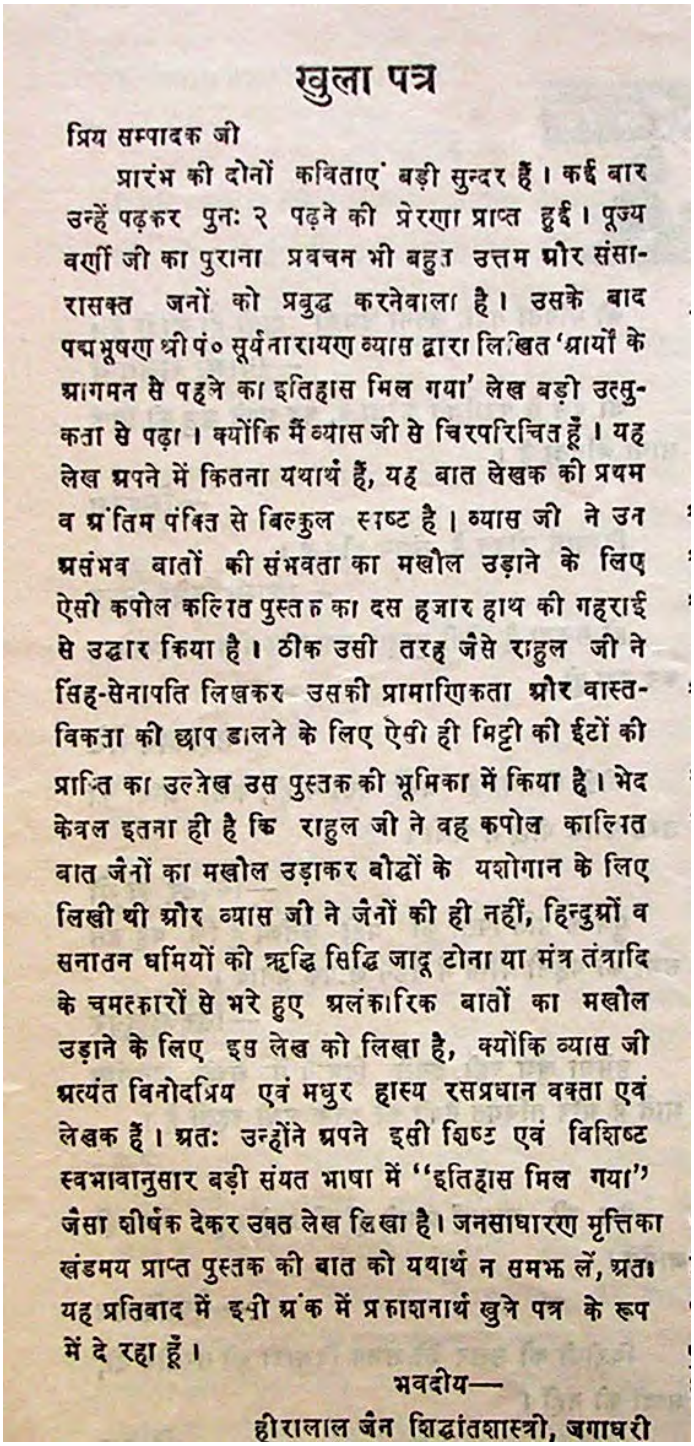

खुला पत्र

प्रिय सम्पादक जी

प्रारंभ की दोनों कविताएं बड़ी सुन्दर हैं। कई बार उन्हें पढ़कर पुनः २ पढ़ने की प्रेरणा प्राप्त हुई। पूज्य वर्णी जी का पुराना प्रवचन भी बहुत उत्तम और संसारासक्त जनों को प्रबुद्ध करनेवाला है। उसके बाद पद्मभूषण श्री पं० सूर्यनारायण व्यास द्वारा लिखित 'आर्यों के आगमन से पहले का इतिहास मिल गया' लेख बड़ी उत्सुकता से पढ़ा। क्योंकि मैं व्यास जी से चिरपरिचित हूँ। यह लेख अपने में कितना यथार्थ हैं, यह बात लेखक की प्रथम व अंतिम पंक्ति से बिल्कुल स्पष्ट है। व्यास जी ने उन असंभव बातों की संभवता का मखौल उड़ाने के लिए ऐसी कपोल कल्पित पुस्तक का दस हजार हाथ की गहराई से उद्धार किया है। ठीक उसी तरह जैसे राहुल जी ने सिंह-सेनापति लिखकर उसकी प्रामाणिकता और वास्तविकता की छाप डालने के लिए ऐसी ही मिट्टी की ईटों की प्राप्ति का उल्लेख उस पुस्तक की भूमिका में किया है। भेद केवल इतना ही है कि राहुल जी ने वह कपोल कल्पित बात जैनों का मखौल उड़ाकर बौद्धों के यशोगान के लिए लिखी थी और व्यास जी ने जैनों की ही नहीं, हिन्दुओं व सनातन धर्मियों की ऋद्धि सिद्धि जादू टोना या मंत्र तंत्रादि के चमत्कारों से भरे हुए अलंकारिक बातों का मखौल उड़ाने के लिए इस लेख को लिखा है, क्योंकि व्यास जी अत्यंत विनोदप्रिय एवं मधुर हास्य रसप्रधान वक्ता एवं लेखक हैं। अतः उन्होंने अपने इसी शिष्ट एवं विशिष्ट स्वभावानुसार बड़ी संयत भाषा में "इतिहास मिल गया" जैसा शीर्षक देकर उक्त लेख लिखा है। जनसाधारण मृत्तिका खंडमय प्राप्त पुस्तक की बात को यथार्थ न समझ लें, अतः यह प्रतिवाद में इसी अंक में प्रकाशनार्थ खुले पत्र के रूप में दे रहा हूँ।

भवदीय—

हीरालाल जैन सिद्धांतशास्त्री, जगाधरी